

मुर्गी पालन

1.	मुर्गी की नस्लें और उनका चयन
2.	ब्रॉयलर या देसी किसे पालना है आसान
3.	मुर्गी पालन में चुनौतियाँ और उनके समाधान
4.	शुरुआत कैसे करें?



1. मुर्गी की नस्लें और उनका चयन

मुर्गी पालन एक महत्वपूर्ण व्यवसायिक गतिविधि है जो न केवल ताजे मांस और अंडों की आपूर्ति करती है, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार और आर्थिक विकास का भी एक प्रमुख साधन है।

मुर्गी पालन के लिए सही नस्ल का चयन एक सफल और लाभकारी व्यवसाय के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। मुर्गी की नस्लें विभिन्न प्रकार की होती हैं, और प्रत्येक नस्ल के अपने-अपने विशेष गुण और उपयोग होते हैं। इस अध्याय में, हम मुर्गियों की विभिन्न नस्लों, उनके चयन के मापदंडों और प्रत्येक नस्ल की विशेषताओं पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

मुर्गी की नस्लों के प्रकार

मुर्गी की नस्लों को मुख्य रूप से तीन प्रमुख श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है:

1. लेयर नस्लें
2. ब्रॉयलर नस्लें
3. द्विउपयोगी नस्लें

❖ लेयर नस्लें (Layers Breeds)

लेयर नस्लें विशेष रूप से अंडा उत्पादन के लिए पाली जाती हैं। इन नस्लों की प्रमुख विशेषता यह है कि ये मुर्गियां अधिक संख्या में अंडे देती हैं और इनका शरीर हल्का होता है, जिससे मांस उत्पादन में इनका उपयोग कम होता है।



■ उल्लेखनीय लेयर नस्लें:

- **व्हाइट लेगहॉर्न (White Leghorn):** यह नस्ल सबसे अधिक प्रसिद्ध और व्यापक रूप से उपयोग की जाने वाली लेयर नस्ल है। व्हाइट लेगहॉर्न मुर्गियां छोटी और पतली होती हैं, जिनका वजन लगभग 1.5 किलोग्राम होता है। ये मुर्गियां साल में लगभग 280-320 सफेद अंडे देती हैं। यह नस्ल अत्यधिक सक्रिय होती है और इन्हें कम स्थान में भी पाला जा सकता है।

- **रोड आइलैंड रेड (Rhode Island Red):** यह नस्ल अंडा उत्पादन के साथ-साथ मांस उत्पादन के लिए भी अच्छी मानी जाती है, हालांकि इसे मुख्य रूप से लेयर के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। ये मुर्गियां भूरे रंग के अंडे देती हैं और इनका वजन लगभग 2.5 किलोग्राम होता है। यह नस्ल कठोर परिस्थितियों में भी जीवित रहने की क्षमता रखती है।
- **ससेक्स (Sussex):** यह एक ब्रिटिश नस्ल है जो अच्छी लेयर मानी जाती है। ससेक्स मुर्गियां सफेद और भूरे रंग के अंडे देती हैं और लगभग 250 अंडे प्रति वर्ष दे सकती हैं। इनका वजन 2.5 से 3 किलोग्राम के बीच होता है।

❖ ब्रॉयलर नस्लें (Broiler Breeds)

ब्रॉयलर नस्लें मुख्य रूप से मांस उत्पादन के लिए पाली जाती हैं। इनका तेजी से वजन बढ़ता है और ये नस्लें कम समय में अधिक मांस का उत्पादन करती हैं।



■ उल्लेखनीय ब्रॉयलर नस्लें:

- **कोर्निश क्रॉस (Cornish Cross):** यह नस्ल विश्वभर में सबसे अधिक लोकप्रिय ब्रॉयलर नस्ल है। कोर्निश क्रॉस मुर्गियां वजन में भारी होती हैं और इनका विकास दर बहुत तेज होता है।

यह नस्ल 6-8 सप्ताह में लगभग 2-3 किलोग्राम का वजन प्राप्त कर लेती है जो इन्हें बाजार में अधिक मांग वाली नस्ल बनाता है।

- **कबीर (Kabir):** यह नस्ल विशेष रूप से भारत में लोकप्रिय है और इसे देसी ब्रॉयलर के रूप में जाना जाता है। कबीर मुर्गियां वजन में कोर्निश क्रॉस से हल्की होती हैं, लेकिन इनका मांस बहुत स्वादिष्ट होता है। ये मुर्गियां 10-12 सप्ताह में 1.5-2 किलोग्राम तक का वजन प्राप्त कर सकती हैं।

- **कोचीन (Cochin):** कोचीन एक भारी और बड़े आकार की नस्ल है, जो ब्रॉयलर के रूप में उपयोग की जाती है। इनका शरीर फुलावदार पंखों से ढका होता है और ये वजन में लगभग 3-5 किलोग्राम तक बढ़ सकती हैं।

❖ द्विउपयोगी नस्लें (Dual-Purpose Breeds)

द्विउपयोगी नस्लें वे नस्लें हैं जो अंडा और मांस दोनों के लिए अच्छी मानी जाती हैं। इन नस्लों का शरीर मध्यम आकार का होता है, और ये नस्लें न केवल अच्छा अंडा उत्पादन करती हैं बल्कि मांस के लिए भी उत्तम होती हैं।

■ उल्लेखनीय द्विउपयोगी नस्लें:

- **ऑस्ट्रेलॉर्प (Australorp):** यह नस्ल ऑस्ट्रेलिया से है और इसे लेयर और ब्रॉयलर दोनों के रूप में उपयोग किया जा सकता है। ऑस्ट्रेलॉर्प मुर्गियां प्रति वर्ष 250-300 भूरे अंडे देती हैं और इनका वजन लगभग 2.5-3.5 किलोग्राम होता है। यह नस्ल ठंडे मौसम में भी अच्छी तरह से जीवित रह सकती है।
- **प्लायमाउथ रॉक (Plymouth Rock):** यह नस्ल अमेरिका से है और इसे भी द्विउपयोगी नस्ल के रूप में जाना जाता है। प्लायमाउथ रॉक मुर्गियां बड़े आकार के भूरे अंडे देती हैं और इनका वजन 3-4 किलोग्राम तक होता है। यह नस्ल भी कठोर परिस्थितियों में जीवित रह सकती है और इनका मांस स्वादिष्ट होता है।

- **न्यू हैम्पशायर (New Hampshire):** यह नस्ल भी एक द्विउपयोगी नस्ल है जो मुख्य रूप से अमेरिका से है। न्यू हैम्पशायर मुर्गियां बड़े आकार के भूरे अंडे देती हैं और इनका वजन 3-4 किलोग्राम तक हो सकता है। ये नस्लें तेज़ी से बढ़ती हैं और इनका मांस भी बाजार में अच्छा बिकता है।

■ नस्ल चयन के मापदंड

मुर्गी पालन के लिए सही नस्ल का चयन कई कारकों पर निर्भर करता है। यहाँ कुछ महत्वपूर्ण मापदंड दिए गए हैं जो नस्ल चयन में मदद कर सकते हैं:

- ❖ **उद्देश्य:** नस्ल का चयन करने से पहले, यह स्पष्ट होना चाहिए कि मुर्गी पालन का मुख्य उद्देश्य क्या है - अंडा उत्पादन, मांस उत्पादन, या दोनों। यह निर्णय नस्ल चयन को सीधे प्रभावित करता है। उदाहरण के लिए, यदि अंडा उत्पादन प्राथमिक लक्ष्य है, तो व्हाइट लेगहॉर्न या रोड आइलैंड रेड जैसी नस्लों का चयन करना बेहतर होगा।
- ❖ **जलवायु और पर्यावरण:** नस्ल का चयन करते समय जलवायु और पर्यावरण की स्थिति को ध्यान में रखना चाहिए।

कुछ नस्लें ठंडे मौसम में बेहतर प्रदर्शन करती हैं, जबकि कुछ गर्म और आर्द्र मौसम में। उदाहरण के लिए, रोड आइलैंड रेड और ऑस्ट्रेलॉर्प जैसी नस्लें कठोर मौसम में भी जीवित रह सकती हैं, जबकि कोर्निश क्रॉस गर्म और आर्द्र मौसम में संवेदनशील होती हैं।

❖ **खाद्य और पोषण की आवश्यकता:** विभिन्न नस्लों की खाद्य और पोषण की आवश्यकताएं अलग-अलग होती हैं। ब्रॉयलर नस्लें, जो तेजी से वजन बढ़ाती हैं, उन्हें उच्च-ऊर्जा आहार की आवश्यकता होती है, जबकि लेयर नस्लों को अंडा उत्पादन के लिए संतुलित आहार की जरूरत होती है। नस्ल चयन करते समय, पोषण और फीडिंग लागत को भी ध्यान में रखना चाहिए।

❖ **आर्थिक कारक:** नस्ल चयन में लागत और संभावित लाभ एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कुछ नस्लें प्रारंभिक लागत में सस्ती होती हैं लेकिन रखरखाव और फीडिंग लागत में महंगी होती हैं। इसके विपरीत, कुछ नस्लें प्रारंभिक लागत में महंगी होती हैं लेकिन उनकी उत्पादकता और बाजार मूल्य अधिक होता है। उदाहरण के लिए, कोर्निश क्रॉस की प्रारंभिक

लागत अधिक हो सकती है, लेकिन इनका तेजी से बढ़ता वजन और मांस की उच्च मांग इसे आर्थिक दृष्टि से लाभकारी बनाती है।

❖ **रोग प्रतिरोधक क्षमता:** नस्ल का रोग प्रतिरोधक क्षमता भी एक महत्वपूर्ण मापदंड है। कुछ नस्लें आम बीमारियों के प्रति अधिक प्रतिरोधी होती हैं, जो उन्हें कठोर परिस्थितियों में जीवित रहने और उत्पादकता बनाए रखने में सक्षम बनाती हैं। उदाहरण के लिए, रोड आइलैंड रेड और न्यू हैम्पशायर जैसी नस्लें बीमारियों के प्रति अधिक प्रतिरोधी मानी जाती हैं।

❖ **बाजार की मांग:** बाजार की मांग भी नस्ल चयन को प्रभावित करती है। कुछ नस्लें विशेष रूप से स्थानीय बाजार में लोकप्रिय होती हैं और उनकी मांग अधिक होती है। नस्ल का चयन करते समय, स्थानीय और राष्ट्रीय बाजार की प्रवृत्तियों और मांग को भी ध्यान में रखना चाहिए। उदाहरण के लिए, देसी नस्लें जैसे कि कड़कनाथ या कबीर स्थानीय बाजार में अधिक पसंद की जाती हैं और उच्च मूल्य प्राप्त कर सकती हैं।

❖ प्रमुख नस्लों की विशेषताएं और उपयोगिता

मुर्गी पालन में सफलता का एक महत्वपूर्ण कारक सही नस्ल का चयन है। प्रत्येक नस्ल की अपनी विशिष्ट विशेषताएं और उपयोगिता होती हैं जो इसे विशेष परिस्थितियों और उद्देश्यों के लिए उपयुक्त बनाती हैं। उदाहरण के लिए, व्हाइट लेगहॉर्न अपनी उत्कृष्ट अंडा उत्पादन क्षमता के लिए जानी जाती है, जबकि कोर्निश क्रॉस अपनी तेज वजन बढ़ने और मांस की गुणवत्ता के लिए प्रसिद्ध है। द्विउपयोगी नस्लें, जैसे ऑस्ट्रेलॉर्प और प्लायमाउथ रॉक, उन किसानों के लिए आदर्श हैं जो अंडा और मांस दोनों का उत्पादन करना चाहते हैं।



2. ब्रॉयलर या देसी किसे पालना है आसान

ब्रॉयलर और देसी मुर्गी पालन दोनों के अपने-अपने लाभ और चुनौतियाँ होती हैं। यह निर्णय कि किसे पालना आसान है, बहुत हद तक आपकी परिस्थितियों, संसाधनों और उद्देश्यों पर निर्भर करता है। इस लेख में, हम ब्रॉयलर और देसी मुर्गियों के पालन की तुलना करेंगे, ताकि आप बेहतर निर्णय ले सकें।

❖ ब्रॉयलर पालन

ब्रॉयलर मुर्गी मुख्य रूप से मांस उत्पादन के लिए पाली जाती है। इनका विकास दर तेज होता है और ये जल्दी वजन पकड़ती हैं, जिससे इनका पालन व्यावसायिक दृष्टिकोण से लाभकारी हो सकता है।

फायदे:

1. **तेजी से वृद्धि:** ब्रॉयलर मुर्गियों का वजन सामान्यतः 6-8 सप्ताह में 2-3 किलोग्राम तक पहुंच जाता है। इसका मतलब है कि आप जल्दी में मांस का उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। यह समय की बचत करता है और निरंतर आय की संभावना को बढ़ाता है।

2. वजन और मांस की गुणवत्ता: ब्रॉयलर मुर्गियाँ अधिक वजन और उच्च गुणवत्ता का मांस प्रदान करती हैं, जो बाजार में अच्छी कीमत प्राप्त कर सकती है। इनका मांस ताजे और स्वादिष्ट होता है, जो ग्राहकों के बीच लोकप्रिय है।

3. विपणन और मांग: ब्रॉयलर मांस की बाजार में उच्च मांग होती है, और यह व्यापक रूप से उपलब्ध है। इससे विपणन आसान हो सकता है और बिक्री में वृद्धि हो सकती है।

चुनौतियाँ:

1. खर्च और देखभाल: ब्रॉयलर मुर्गियों की वृद्धि के लिए उच्च-प्रोटीन फीड की आवश्यकता होती है, जो महंगा हो सकता है। इसके अलावा, इन मुर्गियों को विशेष देखभाल की जरूरत होती है, जैसे कि उचित तापमान और हवादारी, ताकि उनका स्वास्थ्य ठीक रहे।

2. स्वास्थ्य समस्याएँ: ब्रॉयलर मुर्गियों को विभिन्न बीमारियों और स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है, जैसे कि पैच और ब्रोइलर पॉक्स। इन समस्याओं को

नियंत्रित करने के लिए नियमित टीकाकरण और स्वास्थ्य जांच की आवश्यकता होती है।

3. स्थान और प्रबंधन: ब्रॉयलर मुर्गियों को अधिक स्थान की आवश्यकता होती है और उनके लिए विशेष प्रबंधन की जरूरत होती है, जैसे कि हवा का उचित प्रवाह और साफ-सफाई। इससे उनके पालन में अधिक मेहनत और लागत लग सकती है।

❖ देसी मुर्गी पालन

देसी मुर्गी भारतीय नस्ल की मुर्गी है, जो प्रायः छोटे आकार की होती है और विभिन्न पर्यावरणीय परिस्थितियों के प्रति प्रतिरोधी होती है। ये मुख्यतः अंडा और मांस दोनों के लिए पाली जाती हैं, और ग्रामीण इलाकों में आमतौर पर पाई जाती हैं।

फायदे:

1. कम लागत और रखरखाव: देसी मुर्गियाँ कम लागत पर पाली जा सकती हैं। इनकी फीड की आवश्यकता ब्रॉयलर मुर्गियों की तुलना में कम होती है, और ये प्राकृतिक रूप से

भोजन खोजने में सक्षम होती हैं। इस प्रकार, इनकी देखभाल और प्रबंधन में भी कम खर्च होता है।

2. स्वास्थ्य और प्रतिरोध: देसी मुर्गियाँ आमतौर पर स्थानीय परिस्थितियों के प्रति प्रतिरोधी होती हैं और इन्हें विभिन्न प्रकार की बीमारियों और संक्रमणों के प्रति अच्छा प्रतिरोध होता है। इसके चलते, इनका स्वास्थ्य प्रबंधन कम चुनौतीपूर्ण होता है।

3. स्वस्थ और स्वादिष्ट मांस: देसी मुर्गियों का मांस भी स्वादिष्ट होता है और इसमें उच्च पोषण सामग्री होती है। इस मांस की बाजार में अच्छी मांग है, विशेषकर ग्रामीण और स्थानीय बाजारों में।

चुनौतियाँ:

1. धीमी वृद्धि दर: देसी मुर्गियों की वृद्धि दर ब्रॉयलर मुर्गियों की तुलना में धीमी होती है। इनका वजन बढ़ने में अधिक समय लगता है, जो व्यवसायिक दृष्टिकोण से कम लाभकारी हो सकता है। आमतौर पर, ये 6-12 महीने में परिपक्व होती हैं।

2. अंडा उत्पादन: देसी मुर्गियाँ अंडा उत्पादन के मामले में भी ब्रॉयलर नस्लों की तुलना में कम उत्पादक होती हैं। हालांकि, ये अंडे भी स्वादिष्ट होते हैं, लेकिन उत्पादन की दर कम हो सकती है।



3. मांग और विपणन: देसी मुर्गियों का मांस और अंडे सामान्यतः बड़े शहरों में उतनी आसानी से बिकने का नहीं हो सकता, जितना कि ब्रॉयलर मांस। विपणन और बिक्री में चुनौती हो सकती है, खासकर यदि आप शहरों में नहीं रहते हैं।

3. मुर्गी पालन में चुनौतियाँ और उनके समाधान

मुर्गी पालन, चाहे वह ब्रॉयलर हो या देसी, एक लाभकारी व्यवसाय हो सकता है, लेकिन इसके साथ कई चुनौतियाँ भी आती हैं। इन चुनौतियों का सही तरीके से समाधान न करने पर उत्पादन में कमी, स्वास्थ्य समस्याएँ और आर्थिक नुकसान हो सकते हैं। इस लेख में, हम मुर्गी पालन में आम चुनौतियों और उनके संभावित समाधानों पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

❖ स्वास्थ्य समस्याएँ

चुनौती: मुर्गियों को विभिन्न प्रकार की बीमारियाँ और संक्रमण हो सकते हैं, जैसे कि न्यूकैसल डिजीज, ब्रोइलर पॉक्स, मरेक्स डिजीज, और सैलमोनेला। इन बीमारियों के कारण मुर्गियों की उत्पादकता में कमी हो सकती है और आर्थिक नुकसान हो सकता है।

समाधान:

- . **टीकाकरण:** बीमारियों से बचाव के लिए नियमित टीकाकरण आवश्यक है। उचित टीकाकरण प्रोग्राम का

पालन करके आप अधिकांश आम बीमारियों से बचाव कर सकते हैं।

- **स्वच्छता:** फार्म और मुर्गियों के आसपास की स्वच्छता पर ध्यान दें। नियमित रूप से बाड़े और फीडरों की सफाई करें और संक्रमण के खतरे को कम करने के लिए उचित जल निकासी और हवा का प्रबंधन करें।
- **स्वास्थ्य जांच:** नियमित रूप से मुर्गियों की स्वास्थ्य जांच कराएँ और किसी भी बीमारी के लक्षण दिखते ही विशेषज्ञ से सलाह लें।

❖ फीड और पोषण

चुनौती: मुर्गियों के लिए सही पोषण और फीड की व्यवस्था करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य हो सकता है। गलत आहार से उत्पादन में कमी और स्वास्थ्य समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं।

समाधान:

- **संतुलित आहार:** मुर्गियों के लिए एक संतुलित और पूर्ण आहार प्रदान करें जिसमें सभी आवश्यक पोषक तत्व शामिल हों। ब्रॉयलर मुर्गियों के लिए प्रोटीन और ऊर्जा से

भरपूर फीड आवश्यक है, जबकि लेयर मुर्गियों के लिए कैल्शियम और फास्फोरस की पर्याप्त मात्रा जरूरी है।

- . **फीड गुणवत्ता:** उच्च गुणवत्ता वाले फीड का चयन करें और सुनिश्चित करें कि फीड ताजे और स्वच्छ हो। खराब फीड से स्वास्थ्य समस्याएँ हो सकती हैं।
- . **फीडिंग शेड्यूल:** नियमित फीडिंग शेड्यूल का पालन करें और हर मुर्गी को समान मात्रा में फीड दें।

❖ स्वच्छता और हाइजीन

चुनौती: बाड़े की स्वच्छता और हाइजीन बनाए रखना मुश्किल हो सकता है, विशेष रूप से बड़े फार्मों में। गंदगी और कीटाणु संक्रमण और बीमारियों का कारण बन सकते हैं।

समाधान:

- . **सफाई की दिनचर्या:** बाड़े और मुर्गियों के आसपास की नियमित सफाई की दिनचर्या अपनाएँ। गंदगी और अवशेषों को समय-समय पर हटा दें और बाड़े को नियमित रूप से धोएँ।

- **कंट्रोल कीटाणु:** कीटाणुओं और कीड़ों से बचाव के लिए उचित कीटनाशक और एंटीसेप्टिक का उपयोग करें। इससे संक्रमण और बीमारी के खतरे को कम किया जा सकता है।
- **सर्विस और मरम्मत:** बाड़े की मरम्मत और रखरखाव नियमित रूप से करें, ताकि कोई भी टूट-फूट या नुकसान संक्रमण का कारण न बने।

❖ जलवायु और पर्यावरण

चुनौती: जलवायु और पर्यावरण की स्थिति मुर्गियों की स्वास्थ्य और उत्पादकता को प्रभावित कर सकती है। अत्यधिक गर्मी, ठंड या आर्द्रता उनके लिए नुकसानदायक हो सकती है।



समाधान:

- . **वातानुकूलन:** अत्यधिक गर्मी या ठंड से बचाव के लिए उचित वेंटिलेशन और वातानुकूलन की व्यवस्था करें। गर्मी के मौसम में शीतलन और ठंडे मौसम में गर्म रखने के उपाय अपनाएँ।
- . **जल की उपलब्धता:** मुर्गियों को हमेशा स्वच्छ और ताजे पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करें। पानी की कमी से उनकी स्वास्थ्य और उत्पादकता प्रभावित हो सकती है।
- . **पर्यावरणीय नियंत्रण:** बाड़े के भीतर की आर्द्रता और वेंटिलेशन को नियंत्रित करें। इससे मुर्गियों के स्वास्थ्य में सुधार हो सकता है और बीमारियों की संभावना कम हो सकती है।

❖ लागत और आर्थिक प्रबंधन

चुनौती: मुर्गी पालन में लागत प्रबंधन एक महत्वपूर्ण चुनौती हो सकती है। फीड, चिकित्सा, और बुनियादी ढांचा की लागतों को नियंत्रित करना कठिन हो सकता है।

समाधान:

- . **लागत विश्लेषण:** नियमित रूप से लागत विश्लेषण करें और यह सुनिश्चित करें कि आपका बजट लागत और आय के बीच संतुलित हो। अनावश्यक खर्चों को कम करने का प्रयास करें।
- . **विपणन रणनीति:** उचित विपणन रणनीति अपनाएँ और उत्पादों की अच्छी कीमत प्राप्त करने के लिए स्थानीय और राष्ट्रीय बाजारों का अध्ययन करें। इससे आय बढ़ाने में मदद मिल सकती है।



❖ श्रम और प्रबंधन

चुनौती: मुर्गी पालन में श्रम और प्रबंधन का उचित तरीके से प्रबंधन करना एक बड़ी चुनौती हो सकती है। श्रमिकों की भर्ती, प्रशिक्षण और प्रबंधन में समस्याएँ आ सकती हैं।

समाधान:

- . **प्रशिक्षण:** श्रमिकों को उचित प्रशिक्षण प्रदान करें ताकि वे मुर्गी पालन के सभी पहलुओं को समझ सकें और प्रभावी ढंग से काम कर सकें।
- . **प्रबंधन प्रणाली:** एक सुव्यवस्थित प्रबंधन प्रणाली स्थापित करें, जिसमें काम की जिम्मेदारियों का स्पष्ट वितरण, नियमित निरीक्षण, और समस्याओं के त्वरित समाधान शामिल हों।
- . **संदेश और संचार:** प्रभावी संचार प्रणाली बनाएँ ताकि सभी कर्मचारी एक ही लक्ष्य की ओर काम कर सकें और किसी भी समस्या का शीघ्र समाधान किया जा सके।

❖ विपणन और बिक्री

चुनौती: मुर्गी पालन के उत्पादों को बाजार में बेचना और अच्छा मूल्य प्राप्त करना भी एक चुनौतीपूर्ण कार्य हो सकता है। बाजार की मांग और आपूर्ति की स्थिति को समझना महत्वपूर्ण है।



समाधान:

- . **बाजार अनुसंधान:** स्थानीय और राष्ट्रीय बाजार की मांग और आपूर्ति की स्थिति का अध्ययन करें। इसके आधार पर, विपणन रणनीतियाँ विकसित करें।
- . **उत्पाद की गुणवत्ता:** अपने उत्पादों की गुणवत्ता पर ध्यान दें और यह सुनिश्चित करें कि वे बाजार में प्रतिस्पर्धात्मक हों।

4. शुरुआत कैसे करें?

किसानों को ज़ीरो डे यानी तुरंत जन्में मुर्गी के बच्चे (चूजे) से व्यवसाय की शुरुआत करनी चाहिए। एक बार जब वह चूजों को पालना सीख लेते हैं, तो समझ लीजिए कि उनका काम आसान हो गया। जैसे गाय, बकरी के चिल्लाने पर किसान समझ जाता है कि वह भूखे हैं, ऐसे ही यदि आप मुर्गी को कब भूख लगी है यह जान गए, तो समझ लीजिए की फ़ार्मिंग सीख ली। चूजे के विकास के लिए सही तापमान ज़रूरी है। इसके लिए लाइट या लकड़ी के बुरादे की सीकरी का इस्तेमाल कर सकते हैं। तापमान को 12 दिनों तक मेंटेन कर लें तो समझ लीजिए की बस सब ठीक हो गया, लेकिन इतने दिनों तक आपको मेहनत करनी होगी।